इसलिए सर्वशक्तिवान कहते हैं। बाप कहते हैं, मैं कुछ भी करता नहीं हूँ। मेरा तो काम ही है रास्ता बताना। बाप को भूले खेल खलास। फिर बाप को याद करने से मालिक बन जाते हो। यह भी तुम जानते हो। यह चक्र भी याद रखो तो बहुत खुशी रहे। भगवान हमको पढ़ाते हैं, भगवान–भगवती बनाने; परंतु माथ(य)ा (खुशी) में रहने न देती है। जब तक जंक न निकले। पतित को पावन बनना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान इस एक ही जन्म में बनना है। ड्रामा प्लैन अनुसार हरेक पुरुषार्थ कर रहे हैं। न चाहते भी संकल्पों–विकल्पों के तूफान बहुत आवेंगे; क्योंकि तुम अविनाशी सर्जन की दवाई करते हो। तो बीमारी उथलेंगी। इसको ही तूफान कहा जाता है। बाबा ने समझाया है शिव के, ल.ना. के, राम के पुजारी अच्छा उठावेंगे। उनको झट (समझ) में आवेगा। और गंगा घाट पर जाए बैठो। बोलो, पतित–पावन तो बाप है या यह पानी। इनसे तुम पावन कैसे बनेंगे। बाबा फर्रूखाबाद वालों को थेंक्स लिखेंगे। जो बाबा पर्चे के लिए कहते रहते हैं और कोई ने छपा कर नहीं भेजा है। उन्होंने भेजा है। अच्छी मेहनत म्युज़ियम आदि बना रहे हैं। अपना–2 देते रहते हैं म्युज़ियम खोलो। बहुतों का कल्याण होगा। निमित्त हम बनेंगे बहुतों की आर्शीवाद मिलेगी। अज्ञान काल में भी बाप से लेते हैं। बाप से दो मूठी(मुट्ठी) चावल बदली महल लेते हैं यह तो सबसे अच्छा हुआ ना। ऐसे बाप को तो बहुत लव, लवली याद करना चाहिए। तुम अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हो। राजतिलक के लायक अपन को बनाना है। टीचर टीच करने लिए बांधा हुआ है। इसमें कृपा आदि की बात ही नहीं। रहम कृपा भी यह गुरुओं ने किया जो तुम विकारी बन पड़े हो। बाप ओबिडियन्ट सर्वेन्ट है। सबको धनवान सुखी स्वर्ग का मालिक बनाकर खुद अपने शांतिधाम बैठ जाते हैं। ऐसे बाप को तो प्यार करना चाहिए ना। भक्ति मार्ग में बच्चों इनजम(अंजाम) किया है बाबा आप आवेंगे तो हम आपके बनेंगे। दूसरा न कोई। बाकी तो यह सब मरे पड़े हैं। हम भी पढ़ाते हैं। जानते हैं, पढ़कर पूर किया तो यह शरीर खत्म हो जावेगा। अभी पढ़ाने वाला आया है। सिर्फ़ पढ़ना है और बाप को याद करना है। दैवी गुण धारण करनी है। रुलेंगे–पिलेंगे तो होंगे खराब। ऊँच पद पाना है तो एक रस होना चाहिए। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 5/5/68 "शिवबाबा याद है?"

बच्चों के पास जितना समाचार आते हैं और कोई पास नहीं; क्योंकि जैसे बाप सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को जानते हैं वैसे बच्चों के पास भी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का समाचार है; इसलिए इनको स्वदर्शनचक्रधारी कहते हैं। बाप को भी जानते हैं और रचना के आदि, मध्य, अंत को भी जानते हैं। सिर्फ़ चक्र को जानने से नई दुनियां के चक्रवर्ती राजा बन जाते हैं। बच्चे जानते हैं बाप से हम यह पद पा रहे हैं। बाप आकर नर से नारायण बनाने का ज्ञान दे रहे हैं। आत्मा जब तक प्योर न हुई है तो यह बन न सके; इसलिए बाप याद की यात्रा सिखला रहे हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करें तब ही पाप भस्म हों। यह है योगाग्नि। यह ज्ञान मिलता ही है कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर। इसमें आस्तिक भी बनते हैं। बाप को और रचना को जानने से त्रिकालदर्शी भी बनते हैं। बच्चों को अभी याद है चक्र पूरा हुआ। यह दुनियां अभी खत्म होती है। इसको फिर बेहद का वैराग्य कहा जाता है। बेहद का वैराग्य सिर्फ़ प्रवृत्ति मार्ग वाले ही करते हैं। निवृत्ति मार्ग वालों का धर्म है ही अलग। पुराने विश्व का सन्यास और नए विश्व की याद रहती है। बाप कहते हैं, मैं आता ही हूँ संगम पर। पुरानी दुनियां का पूरा सन्यास चाहिए। इन आँखों से जो कुछ देखते हैं वह विनाश हो जाना है। बच्चों को विनाश का सा. भी हुआ। यह भक्तिमार्ग नहीं। भक्तिमार्ग में अनेकों को याद करना पड़ता है। पूजा करनी पड़ती है। लौकिक बाप के होते पारलौकिक को कहते थे बाबा आप आवेंगे तो हम आपका बन 21 जन्म लिए वर्सा लेंगे। ज्ञान और भक्ति का ड्रामा में नूँध है। ज्ञान से विश्व का मालिक भक्ति से विश्व का गुलाम बनते हो। यहां प्रकृति भी रिगार्ड देती है। यहां प्रकृति भी दुःख देती है।

(अ)भी विश्व में रावण राज्य है ना। भारत कितना कंगाल हो पड़ा है। भक्ति को भक्ति, ज्ञान को ज्ञान कहा जाता है। भक्ति को आधा कल्प चलना है। अभी तुम जानते हो हमारा पुराना हिसाब–किताब चुक्तू होता है। फिर हम सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान से तमोप्रधान, फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हैं। खाद निकलते–2 हम सतोप्रधान बन रहे हैं। खाद निकलते–2 हम सतोप्रधान बन जावेंगे; इसलिए बाप समझाते रहते हैं उठते–बैठते याद में रह सकते हो। जैसे यह कार में मुसाफिरी कर आए हैं वहां बहुत ही याद कर सकते हैं। हम सॉलवेंट थे फिर पुनर्जन्म लेते–2 हम इनसॉलवेंट बन पड़े हैं। इस समय की साहूकारी है कल्प काल ..... बाप ने समझाया है यह दुःखधाम है। अपने शांतिधाम–सुखधाम को याद करो। बाप से आत्मा की बहुत प्रीत चाहिए। यह याद की यात्रा वा यह ज्ञान फिर कब नहीं सुनेंगे। अभी ही सुनते हो। थोड़ा भी सुनने से स्वर्ग़ की प्राप्ती होती है। बाप आए ही हैं स्वर्ग़ की स्थापना करने। तुम बच्चे स्वर्ग़ के मालिक बनते हो मालिक थे फिर पुनर्जन्म लेते–2 अभी अंत का जन्म हो गया है। बाप समझाते हैं 84 का चक्र पूरा हुआ फिर अभी वापस जाना है। यह है दुःखधाम। फिर है शांतिधमा–सुखधाम। यह तुम्हारी बुद्धि में ही है। तुमने ही जाना है। तुम बच्चे ही निश्चय करते हो। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। यानि विजयमाला में पिरोए जावेंगे। बुद्धि कहती है यह पुरानी दुनियां है। इनको छोड़ना ही है। बाप आया हुआ है नई दुनिया स्थापन करने। जितना याद करेंगे उतना तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। बाप ने समझाया है चार्ट रखो। यह यूनिवर्सिटी है। वह कथाएँ तो जन्म–जन्मांतर सुनी है। गीता भी सुनी; परंतु राजयोग से राजाई कहां मिली। आधा कल्प तुम भक्ति में रहे हो। सीढ़ी उतरते आए हो। अभी ज्ञान से चढ़ती कला है। 21 जन्म तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। फिर त्रेता में दो कला कम हो जावेगी। सीढ़ी उतरे हो जूं मिसल। आस्ते–2 फिर चढ़ते हो एक सेकण्ड में। इन बातों का किसको पता नहीं है। समय थोड़ा होता जाता। अकाले मृत्यु भी होती जाती है। ड्रामा के मत से ऊँच प्रारब्ध बनती है। 84 के चक्र को तुम अच्छी रीत जान चुके हो। बाप कहते हैं तुम ही पूज्य बनते हो। फिर जिसने तुमको ऐसा बनाया उनकी पूजा करते हो। भक्ति से दुगर्ति को पाते जाते हो। वर्सा मिलना ही है रचना से। रचना से नहीं। तो बच्चों को पूरा रास्ता बताना है। शिवबाबा की जीवन कहानी बच्चे ही जान सकते हैं। बाप का परिचय देना है और कोई साथ भी बुद्धि योग न जाए बाबा आपे ही सिवाय और कोई को याद नहीं करेंगे। तुम सतोप्रधान फिर तमोप्रधान बनते जाते हो। यह याद करना है। इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। भक्ति मार्ग में तो बहुत धक्के खाते हैं। कृष्ण तो अभी है नहीं। 84 जन्म भो(ग) तमोप्रधान हो गया। मनुष्य तो कहते हैं कि भगवान तो है ही। अर्थ तो कुछ भी नहीं जानते हैं। बाप ही आकर सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझाते हैं। बच्चों को निश्चय हो गया है कि पतित–पावन तो एक ही है। बाप को अपनी राजधानी को और चक्र के आदि, मध्य और अंत को ही याद करना है। सो भी इस ही जन्म में। भक्ति बन्द। इसको ही भक्ति कल्श कहा जाता है। अब यह तुम जो कुछ भी देखते हो सबकुछ ही ख़त्म हो जाना है। अब बाप को और अपनी राजधानी को ही याद करना है। अंत मते सो गते हो जावेगी। गृहस्थ व्यवहार में रह कर कमल फूल समान पवित्र रह दैवी गुण धारण करते रहो। ज्ञान तो बहुत ही सहज है। बाकी तो माया विघ्न भी डालती है। तुम्हारे ही इस याद से सारा विश्व ही पावन बन जावेगा। रूहानी बाप को ही याद करना है। रूहानी बाप से ही सुनना है। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप वा दादा का दिल जान सिक वा प्रेम से याद प्यार और गुडनाइट। ओमशान्ति।